# नागरिकशास्त्र शिक्षण की विभिन्न विधियाँ ①
# (Different Methods of Teaching of Civics)

शिक्षण विधि - शिक्षण का एक साधन है जिसके द्वारा अध्यापक अपने पाठ को रोचक व प्रभावशाली बनाता है। किस विषय में कौन-सी पद्धति का प्रयोग किया जाय, इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। इसीलिए पद्धति का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से होता है। एक पद्धति एक शिक्षक के लिए सफल है तो यह आवश्यक नहीं है कि दूसरे शिक्षक लिए भी वह सफल होगी। इस प्रकार एक शिक्षक के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का ज्ञान आवश्यक है। अतः अध्यापक छात्रों की स्थिति, परिस्थिति एवं विषय की प्रकृति को देखकर शिक्षण विधियों का चुनाव करता है।

हरबर्ट वार्ड और फ्रैंक रोस्को का का शिक्षण विधि के बारे में निम्नलिखित विचार है —

"यह सत्य है कि उत्तम पद्धति कृत्रिम या यांत्रिक प्रणालियों का योग नहीं है तथा प्रत्येक शिक्षक को स्वयं अपनी शिक्षण विधि को आविष्कृत करना चाहिए, यह स्मरणीय है कि उत्तम शिक्षण विधि कुछ निश्चित व्यापक सिद्धान्तों के अनवरत निरीक्षणों के परिणामस्वरूप ही जन्म ले सकती है। इसके अन्तर्गत शिक्षण की व्यवस्थित प्रणाली एवं विषयवस्तु की क्रमबद्धता का समावेश होता है जिसके परिणामस्वरूप समय एवं शक्ति की बचत होती है। इसके द्वारा विषयवस्तु का महत्ता के अनुसार वर्गीकरण करना सम्भव हो सकेगा और इसके द्वारा छात्रों का अधिकतम सहयोग प्राप्त होगा तथा उसकी अध्ययन कार्य में सक्रिय रुचि बनी रहेगी।"

इसप्रकार वास्तव में शिक्षण विधि विषय सामग्री को छात्रों तक पहुँचाने का एक माध्यम है जो उद्देश्य प्राप्ति में भी अपना सक्रिय सहयोग ~~प्राप्त~~ प्रदान करती है। कुछ शिक्षाशास्त्री यह मानते हैं कि शिक्षणविधि ऐसी होनी चाहिए जो बालकों को निष्क्रिय ~~स्रोता~~ श्रोता न बनाये वरन् उनमें सक्रियता व जीवन्तता के गुण उत्पन्न करे। उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास करे और उनमें तर्क, विचार, निर्णय, विश्लेषण, संश्लेषण आदि गुणों का विकास हो। किसी भी शिक्षण विधि का प्रयोग क्यों न किया जाय इसके सम्बन्ध में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने कहा कि शिक्षणविधि का निम्नलिखित उद्देश्य होना चाहिए —

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, "शिक्षण विधि चाहे अच्छी हो या बुरी, शिक्षक तथा छात्रों में अवयवी ढंग से घनिष्ठता स्थापित करती है, यह घनिष्ठता उनके बीच होने वाली

Scanned with CamScan

क्रियाओं के माध्यम से स्थापित होती है। शिक्षणविधि छात्रों के मस्तिष्क पर ही प्रभाव नहीं डालती वरन् उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है अर्थात उनके कार्य तथा निर्णय, उनके बौद्धिक तथा संवेगात्मक विकास, उनकी अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को भी प्रभावित करती है। अच्छी विधियाँ मनोवैज्ञानिकता तथा सामाजिकता पर आधारित होती हैं फलस्वरूप वे छात्रों के जीवन की गुणवत्ता को उन्नत बनाती है, परन्तु बुरी विधियाँ इन गुणवत्ता को समाप्त कर देती हैं। अतः विधियों के चयन एवं निर्धारण में शिक्षकों को सदैव उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए अर्थात वे छात्रों में किन अभिवृत्तियों तथा मूल्यों का चेतन या अचेतन रूप से विकास करना चाहते हैं।"

वैसले के अनुसार, "शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे छात्रों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।"

"In Education the word method indicates a series of teacher directed activities that result in learning by the pupils." Wesely

बाइनिंग का विचार है कि "शिक्षण विधि शिक्षा प्रक्रिया का गतिशील कार्य है।" "Methodology is a dynamic function of Education." Biming

प्रसिद्ध अमेरिकन शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी ने कहा है कि, "पद्धति वह तरीका है जिसके द्वारा हम पठन सामग्री को व्यवस्थित करके निष्कर्षों को प्राप्त करते हैं।"

"It is way of managing material to develop conclusions." John Dewey

## शिक्षण विधि की आवश्यकता एवं महत्व

मुनेश्वर प्रसाद के शब्दों में, "शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भोजन एवं मकान के उद्देश्यों से कहीं दुरूह तथा पेचीदा है, केवल अच्छे शिक्षा कक्ष का आयोजन पर्याप्त नहीं। शिक्षा कक्ष हमें केवल उन सामग्रियों को उपलब्ध कराता है, जिनके सहारे हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। किन्तु इन सामग्रियों का उपयोग कैसे किया जाय ताकि वह ज्ञान प्राप्ति के साधन बन सकें। इसकी जानकारी बहुत जरूरी है। शिक्षण विधि शिक्षा की सामग्रियों के उपयोग तक ही सीमित नहीं बल्कि इनकी आवश्यकता इससे बढ़कर है।"

शिक्षा प्रणाली में शिक्षण पद्धतियों का अत्यधिक महत्व है। शिक्षण पद्धतियाँ शिक्षण-कला को सुन्दर तथा सरल बनाती है। शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान सभी शिक्षकों को होना आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षण पद्धतियाँ, शिक्षा के उद्देश्यों तथा मूल्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित और उन्हें प्राप्त कराने में सहायक होती हैं।

शिक्षण पद्धति का शिक्षण कार्य में महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु इसका प्रयोग अध्यापक को बहुत ही सावधानी

Scanned with CamScanner

से करनी चाहिए। एक ही ढंग से सभी को हाँकना अनुपयुक्त है। ठीक उसी प्रकार एक ही पद्धति से सभी विषयवस्तु तथा छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के अनुसार पद्धति पद्धतियों को बदलते रहना चाहिए। अतः शिक्षण पद्धति को एक गतिशील तथा गत्यात्मक रूप में प्रयोग करना चाहिए।

श्रीमती एस. के. कोछर (Smt. S.K. Kochhar) ने अपनी पुस्तक 'Methods and technique of teaching' में शिक्षण पद्धति के महत्व की अत्यन्त सुन्दर व्याख्या की है। वे लिखती हैं जिस प्रकार एक सैनिक को लड़ने के लिए विभिन्न हथियारों का ज्ञान आवश्यक है, उसी प्रकार एक शिक्षक को भी शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान आवश्यक है। किस समय कौन सी पद्धति अपनाई जाय, यह उसकी निर्णय शक्ति पर निर्भर है।"

इस प्रकार उत्तम पद्धति द्वारा छात्रों में वाँछित परिवर्तन लाने की क्षमता होनी चाहिए तथा छात्रों को विषयवस्तु के प्रति रुचि उत्पन्न करे तथा प्रेरित करे।

## नागरिकशास्त्र शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधियाँ
## (Methods Used in teaching of Civics)

नागरिकशास्त्र शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधियों को हम निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं—

(1) परम्परागत विधियाँ (Traditional Methods)
- (a) व्याख्यान विधि (Lecture Method)
- (b) पाठ्य-पुस्तक विधि (Text book Method)
- (c) कहानी विधि (Story-telling Method)

(2) आधुनिक विधियाँ (Modern Method)
- (a) योजना विधि (Project Method)
- (b) स्रोत विधि (Source Method)
- (c) वाद विवाद विधि (Discussion Method)
- (d) समस्या विधि (Problem Method)
- (e) इकाई विधि (Unit Method)
- (f) निरीक्षण विधि (Observation Method)
- (g) समाजीकृत अध्ययन विधि (Socialised Recitation Method)
- (h) संश्लेषण व विश्लेषण विधि (Analysis and Synthesis Method)
- (i) आगमन निगमन विधि (Inductive Deductive Method)
- (j) Supervised Study Method (निरीक्षित अध्ययन विधि)
- (k) प्रयोगशाला विधि (Laboratory Method)

Scanned with CamScanner